International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 5.143, Volume 02, No. 03, July - September, 2020, pp.338-344

प्राचीन युग से आधुनिक युग तक संस्कृत आयुर्वेद संबंध

डॉ. अर्पिता चटर्जी*

प्रस्तावना

संस्कृत वाङ्गमय एक विशाल भंडार है जिसमें अनेक प्रकार के तत्त्व विद्यमान हैं । न केवल प्राचीन काल में अपितु आधुनिक समय में भी इस भाषा की उपयोगिता एवं योगदान को विस्मृत नहीं किया जा सकता। प्रत्येक क्षेत्र में चाहे वह विज्ञान हो या गणित ,कला हो या वाणिज्य इस भाषा में ही सर्वप्रथम अनुसंधान किए गए । आज हमारे देश का विज्ञान उन्नति की ओर उन्मुख है जिसका वास्तविक कारण संस्कृत भाषा एवं उसके अंतर्गत होने वाले आविष्कार ही हैं । कालांतर में परिवर्त्तन तो होता गया किंतु मूल रूप संस्कृत ही रहा जिस पर आश्रित होकर आधुनिक विज्ञान फल फूल रहा है।

ऐसा माना जाता है कि चौरासी लाख योनियों के पश्चात् मानव जीवन की प्राप्ति होती है । सभी जीवों में मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जिसे विवेक और कर्म भकी क्षमता प्राप्त है । मानव जीवन का एकमात्र उद्देश्य है कर्म करना और अपने कल्याणार्थ जन्म मरण के बंधन से मुक्त होना । ऐसा तभी संभव है जब वह अपने शरीर और मन दोनों को पूर्ण रूप से स्वस्थ रखता है , परिणाम स्वरूप आयुर्वेद जैसे ग्रंथ की रचना हुई । हमारे ऋषि मनीषियों ने स्वस्थ जीवनचर्या के लिए कई नियम बताए हैं जिनका पालन करने से मनुष्य सदा सुखद जीवन प्राप्त करता है।

आयुर्वेद यह शब्द इस अर्थ का द्योतक है कि ऐसा वेद जो स्वस्थ आयु प्रदान करे । ऐसा वेद जिससे मनुष्य स्वस्थ स्वास्थ्य की परिभाषा जाने ,उसके उपायों एवं व्याधि के लक्षणों से अवगत होकर अपना स्वास्थ्य जीने योग्य बना लें । भगवान धन्वंतरि आयुर्वेद के प्रवर्तक माने गए हैं एवं उनके द्वारा कई महर्षियों को इसका ज्ञान दिया गया । महर्षि सुश्रुत ने आयुर्वेद शब्द की व्याख्या में लिखा है –

"आयुरस्मिन् विद्यते अनेन वा आयुर्विंदतीति आयुर्वेदः ।" 1

अर्थात् आयुर्वेद वह शास्त्र है जिससे मनुष्य अपनी आयु को प्राप्त करता है।

मानव जीवन को सुखमय बनाने के लिए , स्वस्थ शरीर का स्वास्थ्य रक्षा के लिए तथा व्याधि ग्रस्त शरीर के रोगों के निवारणार्थ महर्षियों ने अपनी प्रतिभा अनुभव तथा प्रयोगों के बल पर जिस शास्त्र को उत्पन्न किया उसी का नाम है आयुर्वेद है । चरक सूत्रस्थान में इससे संबंधित श्लोक हैं–

हिताहितं सुखं दुःखमायुक्तस्य हिताहितम्।
मानं च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्यते ।।2

आयुर्वेद के दो मुख्य प्रयोजनों का भी उल्लेख आचार्य सुश्रुत द्वारा किया गया है –

- व्याधि से युक्त व्यक्तियों का व्याधिपरिमोक्ष
- स्वस्थ के स्वास्थ्य की रक्षा

व्यध्युपसृष्टानां व्याधिपरिमोक्षः।
स्वस्थस्य स्वास्थ्यरक्षणम् ।।3

---

6 Ph-D., Assistant Teacher, Carmel School, Bhagalpur, Bihar, India

आयुर्वेद के इतिहास की ओर दृष्टिपात करने पर ज्ञात होता है कि यह अथर्ववेद का ही उपांग है। महाभारत आदि ग्रंथों में इसे ऋग्वेद का उपवेद माना गया है परंतु स्वयं आचार्य चरक, आचार्य सुश्रुत ने इसे अथर्ववेद का उपवेद स्वीकार किया है । इसके संबंध में कहा गया है –

इदं खलु आयुर्वेदं नानोपांगमथर्ववेदस्य। 4

प्राचीन युग से आधुनिक युग पर्यंत आयुर्वेद और संस्कृत का दृढ़ संबंध रहा है क्योंकि आयुर्वेद भी संस्कृत भाषा की ही देन है, अतः इसे कभी भी संस्कृत से पृथक् नहीं किया जा सकता । आयुर्वेद का अस्तित्व वैदिक युग से है जहाँ देवताओं को इसके चिकित्सक का स्थान दिया गया है। अथर्ववेद के चतुर्थ कांड का 13वाँ सूक्त तथा ऋग्वेद के दशम मंडल का 137वाँ सूक्त 'रोग निवारण सूक्त ' के नाम से प्रसिद्ध है । अथर्ववेद में अनुष्टुप् छंद के इस सूक्त के ऋषि शंताति तथा देवता चन्द्रमा एवं विश्वेदेवा हैं जबकि ऋग्वेद में प्रथम मंत्र के ऋषि भरद्वाज, द्वितीय के कश्यप, तृतीय के गौतम, चतुर्थ के अत्रि, पंचम के विश्वामित्र, षष्ठ के जमदग्नि तथा सप्तम मंत्र के ऋषि वशिष्ठ जी हैं और देवता विश्वेदेवा हैं । इस सूक्त के जप–पाठ से रोगों से मुक्ति अर्थात् आरोग्यता प्राप्त होती है।5

ऋग्वेद के मंत्रों में अश्विन् देवता का वर्णन है एवं इन्हें देववैद्यों की श्रेणी में रखा गया है । इनके माहात्म्य का प्रतिपादन करते हुए कहा जाता है कि एक बार जब युद्ध में राजा खेल की पत्नी विश्पला की टाँगें शत्रुओं द्वारा काट दी गई तब इन्होंने लोहे की जाँघ लगा दी और चलने योग्य बना दिया –

चरित्रं हि वेरिवाच्छेदि पर्णमाजा खेलस्य परितक्म्यायाम्।

सद्यो जंघामायासीं विश्पलायै धने हिते सर्तवे प्रत्यधत्तम्।।6

अश्विन् देवता ने दधीचि ऋषि के असली सिर को हटाकर घोड़े का सिर लगा दिया तथा मधुविद्या को ग्रहण कर पुनः असली सिर लगा दिया ।यह मंत्र द्रष्टव्य है–

तद्वां नरा सनये दंस उग्रमाविष्कृणोमि तन्यतुर्न वृष्टिम् ।

दध्यङ् ह यन्मध्वाथर्वणो वामश्वस्य शीर्ष्णा प्र यदीमुवाच ।।7

महाभारत में कई ऐसे वृत्तांत देखने को मिलते हैं जहाँ हमें पता चलता है कि आयुर्वेद पद्धति द्वापर युग में इस चरम सीमा तक पहुँच चुकी थी कि वीर्य सेचन से संतान उत्पत्ति भी हो जाती थी । वीर्य सेचन पद्धति (टेस्ट ट्यूब बेबी) से गांधारी के पुत्रों का जन्म हुआ था। गर्भवती अवस्था में गांधारी ने अपने पेट में जोर से मारा था जिससे गर्भपात होने लगा । व्यास जी के कथन सुनकर उसने उन टुकड़ों को अलग मटके में रखा जो घी से भरा था । इसे मांस पिण्ड को ठंडे जल से सींचा गया ।

उसके सौ टुकड़े हुए जिन्हें अलग–अलग घी से भरे मटकों में रखा गया।

फिर उससे अलग–अलग अँगूठे के पर्व बराबर 100 गर्भों के रूप में परिणत हो गए। उन मटकों की सुरक्षा की व्यवस्था की गई और पूरे 2 वर्षों तक प्रतीक्षा करने के बाद इन कुंडों का ढक्कन खोला गया जिनसे दुर्योधन आदि उत्पन्न हुए । इस वृत्तांत का उल्लेख निम्नलिखित श्लोकों में किया गया है–

वितथं नोक्तपूर्वं मे स्वैरेष्वपि कुतोऽन्यथा।

घृतपूर्णं कुण्डशतं क्षिप्रमेव विधीयताम् ।।

सुगुप्तेषु च देशेषु रक्षा चैव विधीयताम्।

शीताभिरद्भिरष्ठीलामिमां च परिषेचय।।

सा सिच्यमाना त्वष्ठीला बभूव शतधा तदा।

अङ्गुष्ठपर्वमात्राणाम् गर्भाणाम् पृथगेव तु।।

एकाधिशतं पूर्णं यथायोगं विशाम्पते।

मांसपेश्यास्तदा राजन् क्रमशः कालपर्ययात्।।
शशंस चैव भगवान् कालेनैतावता पुनः ।
उद्घाटनीयान्येतानि कुंडानीति च सौबलीम्।।
जज्ञे क्रमेण चैतेन तेषां दुर्योधनो नृपः
जन्मतस्तु प्रमाणेन ज्येष्ठो राजा युधिष्ठिरः ।।8

महाभारत के आदि पर्व के अंतर्गत संभव पर में ययात्युपाख्यान विषयक 76 वें अध्याय में मृत– संजीवनी विद्या का प्रसंग है । यह विद्या गुरु शुक्राचार्य को ही केवल ज्ञात था तथा गुरु बृहस्पति के पुत्र कच ने उनसे यह विद्या प्राप्त की थी जिससे लगभग मृत व्यक्ति को भी जीवन दिया जा सकता है।9

भारत भूमि में ज्ञात सबसे प्राचीन चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद ही है जिसके कई वृत्तांत रामायण में भी देखे जा सकते हैं। वाल्मीकि कृत रामायण की कथा सबको ज्ञात है। जब श्री राम को वनवास मिला तो इस पीड़ा और कष्ट दायक वियोग को राजा दशरथ सहन नहीं कर पाए और

मर्त्यलोक का त्याग कर दिए । नियमानुसार पुत्र के बिना राजा का दाह–संस्कार होना असंभव था इसलिए उनके शव की रक्षा की जाने लगी । महाराज के शरीर को तेल से भरी हुई द्रोणी में रखकर वशिष्ठ आदि की आज्ञा अनुसार शव की रक्षा की जाने लगी । यह श्लोक द्रष्टव्य है –

तैलद्रोण्यां तदामात्याः संवेश्य जगतीपतिम्।
राज्ञः सर्वाण्यथादिष्टाश्चक्रुः कर्माण्यनन्तरम् ।।10

इस विषय में यह कहा जा सकता है कि जिस प्रकार मिस्र सभ्यता में 'ममी' प्रसिद्ध है जिसमें मृत शरीर को जड़ी–बूटियों के लेप से कई वर्षों तक सुरक्षित रखा जाता था अंशतः उसी तरह मृत शरीर का कुछ दिनों के लिए संरक्षण करना हमारे देश में भी दिखाई पड़ जाता है। निश्चित रूप से केवल तेल में ही नहीं बल्कि अन्य जड़ी–बूटियों का भी मिश्रण इसमें मिलाया जाता होगा। रामायण में कई पौधों ,वृक्षों ,जड़ी–बूटियों का वर्णन है, यथा कुटज ,अर्जुन ,कदम्ब, निम्ब, अशोक,सप्तपर्ण आदि। रामायण में सबसे प्रसिद्ध आख्यान युद्ध–काण्ड से है जब लक्ष्मण को बचाने के लिए हनुमान 'औषधि पर्वत' (महोदय गिरि) की खोज करते हैं । परम बुद्धिमान सुषेण ने लक्ष्मण की प्राण रक्षा के लिए महाकपि हनुमान जी से औषधि पर्वत से विशल्यकरणी, सावर्ण्यकरणी, संजीवकरणी तथा संधानी नाम से प्रसिद्ध महौषधियों को लाने का अनुग्रह किया। उनके ऐसा कहने पर हनुमान जी औषधि पर्वत पर गए परंतु इन महौषधियों को न पहचानने पर वे संपूर्ण पर्वत ही उखाड़ लाए–

समीपस्थमुवाचेदं हनूमन्तं महाकपिम्।
सौम्य शीघ्रमितो गत्वा पर्वतं हि महोदयम्।।
पूर्वं तु कथितौ योऽसौ वीर जाम्बवता तव।
दक्षिणे शिखरे जातां महौषधिमिहानय ।।
विशल्यकरणीं नाम्ना सावर्ण्यकरणीं तथा।
संजीवकरणीं वीर संधानीं च महौषधीम् ।।11

यह पर्वत हिमालय की दुर्गम पहाड़ियों के बीच स्थित है ।उपरोक्त वर्णित औषधियों के अर्थ इस प्रकार हैं –

fo'kY;dj.kh% शरीर में धँसे हुए बाण आदि को निकालकर घाव भरने और पीड़ा दूर करने वाली।
lko.;dj.kh% शरीर में पहले जैसी रंगत लाने वाली ।
lthodj.kh% मूर्च्छा दूर कर चेतना प्रदान करने वाली ।
lèkkuh% टूटी हुई हड्डियों को जोड़ने वाली ।

अग्नि पुराण में भी आयुर्वेद का विस्तृत विवरण देखने को मिलता है । अग्नि पुराण में अध्याय 279 से 286 तक आयुर्वेद विषयक सिद्धांत का वर्णन मिलता है । अग्निदेव द्वारा भगवान धन्वंतरि प्रोक्त आयुर्वेदिक उपायों का वाचन किया जाता है। इनमें सिद्धौषध वर्णन, सर्वरोगहरौषध वर्णन, रसादि लक्षण, वृक्षायुर्वेद कथन, नानारोगहरौषध कथन मंत्ररूपौषध कथन, मृतसंजीवन सिद्धयोग कथन ,मृत्युंजयकल्प कथन आदि का वर्णन किया गया है ।

अग्नि पुराण के अनुसार भगवान धन्वंतरि ने चार प्रकार की व्याधियाँ मानी हैं –

- 'kkjhfjd – ज्वर आदि शारीरिक व्याधियाँ हैं ।
- ekufld – क्रोध आदि मानस व्याधि कहलाती हैं ।
- vkxarqd – चोट, प्रहार या अन्य किसी प्रकार के बाह्य अभिघात के कारण उत्पन्न व्याधि आगंतुक व्याधि हैं ।
- lgt – भूख ,जरादि स्वाभाविक (सहज) व्याधि हैं ।

संबंधित श्लोक हैं –

शारीरमानसागन्तुसहजा व्याधयो मताः।
शारीराज्वरकुष्ठाद्याः क्रोधाद्या मानसा मताः ।।
आगन्तवो विधातोत्थाः सहजाः क्षुज्जरादयः ।12

इदानीं कोरोना काल के कारण कम्प्यूटर एवं मोबाईल द्वारा संपूर्ण विश्व में पठन–पाठन का कार्य चल रहा है। अधिकतर कार्य ऑनलाइन हो रहे हैं । इस प्रक्रिया में सबसे अधिक क्षति हमारे नेत्रों को पहुँच रही है। अग्नि पुराण में आयुर्वेद में उल्लिखित कई ऐसी जड़ी–बूटियों एवं औषधियों के उल्लेख हैं जिनसे नेत्र रोग ठीक हो जाते हैं –

व्योषं त्रिफलया युक्तं तुत्थकं च तथा जलम्।
सर्वाक्षिरोगशमनं तथा चैव रसाञ्जनम् ।।
आज्यभृष्टं शिलापिष्टं लोध्रकाञ्जिकसैन्धवैः।
आश्च्योतनविनाशाय सर्वनेत्रामये हितम् ।।
गिरिमृच्चन्दनैर्लेपो बहिर्नेत्रस्य शस्यते ।
नेत्रामयविघातार्थं त्रिफलां शीलयेत्सदा ।।13

अर्थात् व्योष (सोंठ, मिर्च और पीपरि) ,त्रिफला (आँवला,हरड़,बहेड़ा), तूतिया और रसाञ्जन को जल से बारीक पीसकर आँखों में अंजन लगाने से नेत्र के संपूर्ण रोग नष्ट हो जाते हैं। लोध को घी में भूनकर कांजी और सेंधा नमक के साथ पीसकर आँखों में लगाने से नेत्र के सभी रोग दूर हो जाते हैं। गेरू तथा चंदन को घिसकर नेत्र के ऊपर लेप करने से नेत्र रोग में लाभ होता है तथा निरंतर त्रिफला के सेवन से नेत्र रोग दूर हो जाता है। आयुर्वेद में मंत्र को भी औषधि रूप माना गया है । अग्नि पुराण का 284 वाँ अध्याय इस बात की पुष्टि करता है। यहाँ आयु और आरोग्य प्रदान करने वाले ओंकार आदि मंत्रों का उल्लेख है। ओंकार को प्रथम मंत्र माना जिसका जाप कर मनुष्य अमरत्व को प्राप्त करता है, गायत्री परम मंत्र है जिसका जाप कर मनुष्य भोग और मोक्ष दोनों प्राप्त करता है ,साथ ही "ऊँ नमो नारायणाय" मंत्र सभी प्रयोजनों का साधक है –

आयुरारोग्यकर्तार ओंकाराद्याश्च नाकदाः।
ओंकारः परमो मन्त्रस्तं जप्त्वा चामरो भवेत् ।।
गायत्री परमो मन्त्रस्तं जप्त्वा भुक्तिमुक्तिभाक् ।
ऊँ नमो नारायणाय मन्त्रः सर्वार्थसाधकः ।।14

इन अध्ययनों के पश्चात् अब हम आधुनिक युग में आयुर्वेद के स्थान को देखेंगे। पुरातन काल में तो आयुर्वेद का माहात्म्य था ही,आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भी हम आयुर्वेद का खूब प्रचलन देखते हैं । आज अंग्रेजी दवाओं की ओर से मुख मोड़कर लोग आयुर्वेद प्रणाली की ओर बढ़ना चाह रहे हैं , अब सर्वसाधारण को यह ज्ञात हो रहा है कि विदेशी चिकित्सा प्रणाली का परित्याग करके भारतीय उपचार विधि को अपनाना चाहिए । ऐसा देखने को मिलता है कि हमारे सदन के आसपास उद्यान आदि में कई बार ऐसे पौधे उग आते हैं जिन्हें हम उखाड़ फेंकते हैं। कई बार इन्हीं पौधों में औषधीय गुण रहते हैं जिससे हम अवगत नहीं होते। प्रकृति ने अपनी गोद में इन्हें उगाकर, हम प्राणियों को मार्ग दिखाया है । संपूर्ण सृष्टि का मूल यही प्रकृति अनेक विकृतियों को भी जन्म देती है। हमारे शरीर में कफ,पित्त एवं वात त्रिदोषों की अधिकता रोगों को जन्म देती है एवं इनका संतुलन मनुष्य को सुखद एवं स्वस्थ बनाता है। उचित जड़ी–बूटियों के प्रयोग से अनेक रोगों से मुक्ति प्राप्त होती है आज प्रत्येक मनुष्य स्वस्थ जीवन की कामना करता है कोरोना काल के इस भयंकर परिस्थिति में लोग आयुर्वेद विद्या ग्रहण करने पर बाध्य हो गए हैं । जाने अनजाने मुख से संस्कृत ध्वनियाँ निःसृत हो जाती हैं। वैसे भी आज आयुर्वेद विद्या ग्रहण करने का प्रचलन हो रहा है । अतः अध्येताओं को भी इस विषय का ज्ञान होना चाहिए। BAMS अर्थात् Bachelor of Ayurvedic Medicine & Surgery की पढ़ाई आयुर्वेद विद्या ग्रहण करने वालों के लिए उपलब्ध है, जिससे वह आयुर्वेदिक चिकित्सक बनता है। यह पाठ्यक्रम साढ़े 5 वर्षों का होता है। पाठ्यक्रम की जानकारी प्राप्त करने के प्रसंग में यह ज्ञात हुआ कि संस्कृत विषय को भी वहाँ अनिवार्य किया गया है।15 इस दिशा में इनका पठन–पाठन कराने वाले विश्वविद्यालयों की ओर से भी कार्य किए जाते रहे हैं, यथा बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में भैषज्योद्यान ही बना दिया गया है । यहाँ यह बताना आवश्यक है कि भैषज्य शब्द का अर्थ है 'औषधि' । बी0 एच0 यू0 के इस विशेष उद्यान में जड़ी–बूटियों को उपजाया जाता है । विद्यार्थी यहाँ प्रयोगात्मक तथ्यों को समझने एवं सीखने आते हैं । आयुर्वेदिक दर्शन, सूत्र, जड़ी–बूटियाँ एवं उन्हें तैयार करने की विधियाँ, विचार ,चिकित्सा–पद्धति, जीवन–शैली, चिकित्सा–व्यवस्था ये सभी विषय तभी ज्ञात होते हैं जब विद्यार्थी में संस्कृत का ज्ञान हो क्योंकि आयुर्वेद ही इसी भाषा में रचित है। यह भाषा आयुर्वेदिक ग्रंथों को समझने के लिए अति आवश्यक एवं सहायक है। सत्य तो यह है कि संस्कृत जैसी मधुर भाषा मनुष्य मस्तिष्क को स्वस्थ बनाने की क्षमता रखती है। मनुष्य का मस्तिष्क आयुर्वेद के संस्कृत मंत्रों एवं श्लोकों से पवित्र हो जाता है फलतः स्वास्थ्य भी उत्तम बना रहता है। अग्निपुराण की चर्चा के क्रम में मंत्ररूपौषध वर्णन के प्रसंग में यह बात कही जा चुकी है कि "ऊँ नमो नारायणाय" जैसे मंत्र मानसिक औषधि का कार्य करते हैं ।'ओम्' के उच्चारण से हमारा मस्तिष्क एक अद्भुत आनंद एवं स्थिरता को प्राप्त करने लगता है ।आप स्वयं अनुभव कर सकते हैं जब आप कोलाहल से दूर एकांत में एकाग्र चित्त मन से कुछ क्षण के लिए ही ओम का जाप करते हैं तो एक अद्भुत शांति की प्रतीति होती है ।संस्कृत का ज्ञान आयुर्वेदिक दर्शन के मूल सिद्धांतों को जानने में सहायक होता है संस्कृत में दिए गए व्याख्यानों को समझने में सहायक है, संस्कृत के जटिल अर्थों को समझने में सहायता करता है ।कई बार एक शब्द के अनेक अर्थ हो जाते हैं , यथा 'गो' शब्द का अर्थ है–पशु, शव, वीर, वाणी,वज्र,दिक्, नेत्र, सूर्य,भू और जन। 'गोमूत्र' जैसे शब्द का ज्ञान तभी संभव है जब हम इन अर्थों के बीच अंतर को समझें एवं सही अर्थ का चयन करें । इसी प्रकार 'हृत्य' शब्द का अर्थ है–आहरण करना । जब 'हृत्य' शब्द से 'हृ' 16 धातु लेंगे तो उसका अर्थ 'हरण' होगा किंतु इसका दूसरा अर्थ 'ढोना' या 'पहुँचाना' भी होता है । अतः यहाँ 'हृ' धातु का अर्थ 'हरण करना' न होकर 'पहुँचाना' होगा और शब्द का अर्थ होगा– "रक्त में ऑक्सीजन अमृत को पहुँचाना।" संस्कृत का ज्ञान अधिगम प्रक्रिया को भी सरल बनाता है, स्मृति शक्ति बढ़ाता है, आध्यात्मिक शक्ति का भी विकास करता है ।अन्य भाषा में आयुर्वेद अध्ययन का नकारात्मक पक्ष यह होगा कि संस्कृत के शब्दों की पहचान नहीं होगी जिससे ग्रंथ में आए हुए शब्दों के अर्थ समझने में असमर्थता होगी ।

आधुनिक काल में हम पतंजलि के उत्पादों का प्रयोग करते हैं । पतंजलि पूरे देश में फैला आयुर्वेदिक सामग्रियों का उत्पादन करता है । हल्दी, नींबू, अदरक, लहसुन के गुण हमें ज्ञात हैं एवं हम नित्य इसका प्रयोग करते हैं । पात्रों की भी उपयोगिता ज्ञात हो गया कि ताम्रपट में रात भर जल को ढक कर रख देना एवं प्रातः काल खाली पेट इसे पीना । इससे सारे बैक्टीरिया दूर हो जाते हैं। पाचन विकार के

लिए,श्वास विकार के लिए,स्त्री रोग के लिए एवं वेदना नाशक रूप में अदरक, दालचीनी का प्रयोग होता है, पेट की समस्याओं में फायदा होता है, रक्त की कमी जैसी समस्याओं को दूर करता है व त्वचा एवं स्वस्थ हृदय के लिए उपयोगी है । आजकल गिलोय के रस का खूब प्रचलन है । तुलसी मिश्रित पदार्थों का ,आँवला जैसे फलों का सेवन किया जाता है । गिलोय का उपयोग वात,पित्त और कफ से मुक्ति हेतु किया जाता है । संस्कृत में इसे 'अमृतावल्ली' कहा जाता है जो तनाव, मधुमेह की समस्याओं को दूर करने के काम में लाया जा रहा है। त्रिफला– अमलकी, विभीतक और हरितकी– इन तीनों फलों से निर्मित होता है । ऐसी कई औषधियों का लाभ हम आज उठा रहे हैं।

इस तरह आयुर्वेदिक तत्त्वों का प्रयोग प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है । वर्ष में 2018 में 75þ भारतीयों ने अपने प्रतिदिन के व्यावहारिक उत्पादों में आयुर्वेदिक उत्पाद खरीदा जबकि वर्ष 2015 में यह केवल 60þ था ।17 प्रसाधनों की सामग्री भी प्राकृतिक ही खरीदी गई एवं खाद्य पदार्थों का उत्पादन भी इन्हीं आवश्यक तत्त्वों को ध्यान में रखकर बनाया एवं खरीदा गया । अतः आधुनिक परिप्रेक्ष्य में आयुर्वेद के उत्पादों का प्रयोग बढ़ा है। वह दिन दूर नहीं जब संपूर्ण विश्व आयुर्वेद की

उपयोगिता को समझेगा एवं संस्कृत भाषा को अपनाएगा क्योंकि पठन–पाठन एवं मौलिक ज्ञान की दृष्टि से आयुर्वेद अध्ययन तभी होगा जब संस्कृत का ज्ञान होगा ।

आज आयुर्वेद का अध्ययन–अध्यापन विदेशों में भी प्रचलित हो गया है । न केवल आज अपितु आठवी एवं नौवीं शती के आसपास अनेक ग्रंथों का तिब्बती भाषा में अनुवाद हुआ जहाँ तिब्बती चिकित्सा के आधारभूत ग्रंथ संस्कृत के हैं । आज अमेरिका जैसे देशों में भी इस पद्धति को अपनाया जा रहा है । एक अंतर्जाली संगोष्ठी 18 में प्रोफेसर बलराम सिंह जो Institute of Advanced Sciences] Darmauth के प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष हैं, ने कई गूढ़ बातें कहीं जो आयुर्वेद से संबंधित हैं । उन्होंने बताया कि इसी संस्थान के डॉ0 राजकुमार यह शोध कर रहे हैं कि क्या खाया जाए कि हमारा मस्तिष्क स्वस्थ रहे। फलतः ये *Neurological link between diet and mind* पर शोध करने का कार्य कर रहे हैं । प्रोफेसर सिंह ने यह स्पष्ट किया की कुतुब मीनार के स्तंभ में भस्म के सदृश प्राकृतिक रसायन का प्रयोग किया गया है जिससे उसमें जंग नहीं लगता । हैदराबाद में उनके मित्र श्री शास्त्री जी हैं जो प्रकांड विद्वान हैं । उन्होंने सिर्फ संस्कृत के ज्ञान के आधार पर अपनी प्रयोगशाला में 'नैनो पार्टिकल' बनाए हैं । उन्होंने यह भी बताया कि पुर्तगालियों ने आयुर्वेद से इतना अधिक धन अर्जित किया कि ब्राजील जैसे देश के एक भाग को खरीद लिया। ये और इनका दल आयुर्वेद की उन्नति एवं प्रचार प्रसार के लिए यू0एस0 ए0 में अनेक कार्य कर रहे हैं ।

उपरोक्त अध्ययन के आधार पर हम कह सकते हैं कि संस्कृत और आयुर्वेद का संबंध हमेशा से चला आ रहा है चाहे वह वैदिक काल हो या रामायणकालीन त्रेता युग हो या महाभारतकालीन द्वापर युग हो । आधुनिक युग में भी हम इसके महत्त्व को सम्यक् रूप से जान पाते हैं। संस्कृत हमारे लिए अत्यंत उपयोगी भाषा है और आयुर्वेद के अध्ययन के लिए इस भाषा की आवश्यकता अत्यधिक आवश्यक है। आयुर्वेद वैदिक काल से चला आ रहा एक ऐसी चिकित्सा पद्धति है जो अपने आप में संपूर्ण है । इसके ज्ञाता को और किसी अन्य चिकित्सा–पद्धति की आवश्यकता नहीं होती । यदि आवश्यकता होती है तो वह संस्कृत जैसे वैज्ञानिक एवं सार्थक भाषा के ज्ञान की ।

ikn fVIif.k;k¼

1. संस्कृत शास्त्रों का इतिहास–बलदेव उपाध्याय, प्रथम परिच्छेद, पृष्ठ संख्या–1
2. चरक सूत्रस्थान 1/41
3. सुश्रुत संहिता 1/12
4. संस्कृत शास्त्रों का इतिहास बलदेव उपाध्याय, प्रथम परिच्छेद, पृष्ठ संख्या–2
5. आरोग्य अंक; गोरखपुर , गीता प्रेस ;पृष्ठ संख्या–16

6. ऋग्वेद 1/116/15

7. ऋग्वेद 1/116/12

8. महाभारत (प्रथम खंड)– आदिपर्व/संभवपर्व/114/18–25

9. महाभारत (प्रथम खंड)–आदिपर्व/संभवपर्व/76

10. रामायण (प्रथम खंड)–अयोध्याकांड/66/14

11. रामायण (द्वितीय खंड)– युद्धकांड/101/30–32

12. अग्निपुराण/281/1–2

13. अग्निपुराण/279/46–48

14. अग्निपुराण/284/1–2

15. www-collegeduniya-com>syllabus

16. संस्कृत हिंदी कोश,वामन शिवराम आप्टे; पृष्ठ संख्या–1176

17. India Ayurveda Industry Outlook 2019&2020 News provided by& ÞResearch and MarketsÞ Feb 19] 2020 www-prnewswire-com

18. International webinar organised by Sanskrit department] Jammu university and Rashtriya Sanskrit Manch Jammmu &Kashmir prant(Topic & " आयुर्वेद एवं जीव विज्ञान के संदर्भ में संस्कृत को विज्ञान की प्राकृतिक भाषा बनाने के आधार एवं चुनौतियाँ" Resource person& Prof- Balaam Singh Prof-& President Institute of Advanced Science] Darmauth] MA] US I

I UnHkZ xzUFk lwph

¤ आरोग्य अंक– 75 वें वर्ष के कल्याण– विशेषांक का संवर्धित संस्करण; गीता प्रेस, गोरखपुर सत्ताईसवाँ पुनर्मुद्रण

¤ श्रीमन्महर्षि वेदव्यासप्रणीत महाभारत (प्रथम खंड) आदिपर्व और सभापर्व (अनुवादक– साहित्याचार्य पंडित राम नारायण दत्त शास्त्री पाण्डेय 'राम') ;गीता प्रेस, गोरखपुर सोलहवाँ

¤ पुनर्मुद्रण

¤ महर्षिवाल्मीकिप्रणीत श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण (प्रथम खंड)बालकांड से किष्किंधा कांड तक ; गीताप्रेस,गोरखपुर पचपनवाँ पुनर्मुद्रण

¤ महर्षिवाल्मीकिप्रणीत श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण (द्वितीय खंड) सुंदरकांड से उत्तरकांड तक; गीता प्रेस, गोरखपुर पचपनवाँ पुनर्मुद्रण

¤ अग्निपुराणम्, अनुवादक–तारिणी झा ,डॉ घनश्याम त्रिपाठी ;हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग प्रथम संस्करण–1985, द्वितीय संस्करण–1998,तृतीय संस्करण –2007

¤ संस्कृत शास्त्रों का इतिहास–आचार्य बलदेव उपाध्याय(पद्मभूषण); चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी; नवीन संस्करण

¤ ऋग्भाष्य संग्रह, संपादक– स्व0 डॉ देवराज चानना ;मुंशीराम मनोहरलाल पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड; पिजी मकपजपवद 1991

¤ संस्कृत हिंदी कोश, वामन शिवराम आप्टे ;मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड; प्रथम संस्करण–1996; द्वितीय संस्करण–1969; पुनर्मुद्रण– 1973,1977,1981,1984,1987,1989,1993,1997

❖◆❖